गुरुकृपायोगानुसार साधना

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

तथा सद्गुरु डॉ. चारुदत्त प्रभाकर पिंगळे

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रण की १,००० प्रतियां

एवं अब तक ४८,९०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्म के प्रसार हेतु 'सनातन संस्था' की स्थापना !

२. 'गुरुकृपायोग' नामक साधनामार्गके जनक !

३. हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

४. ग्रन्थ-रचना : सितम्बर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ५९ सहस्र प्रतियां !

५. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियों की पीडाओं की उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध !

६. 'सनातन प्रभात' नियतकालिकों के संस्थापक-सम्पादक !

७. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु हिन्दुत्वनिष्ठों का मार्गदर्शन !

८. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – 'www.Sanatan.org'.)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥

– जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९६

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी की उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’ के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहले के लेखन में अथवा अब भी साधकों द्वारा दिए लेखन में उन्होंने ‘प.पू.’ अथवा ‘परात्पर गुरु’ की उपाधियों से सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

अनुक्रमणिका

卐	भूमिका	७
१.	‘साधना’ शब्द का अर्थ	८
२.	गुरु	८
३.	गुरुकृपायोग (अर्थ एवं महत्त्व)	१०
४.	गुरुकृपायोगानुसार साधना	१६
५.	गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधना का नियम – ‘जितने व्यक्ति उतनी प्रकृतियां, उतने साधनामार्ग’	१६
६.	गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधना के प्रमुख सिद्धान्त	१८
७.	साधना में सम्भावित मूलभूत चूकें	३८
८.	गुरुकृपायोगानुसार साधना के प्रकार	४२

विविध प्रसंगों में करने योग्य प्रार्थनाएं बतानेवाला सनातन का लघुग्रन्थ

प्रार्थना (महत्त्व एवं उदाहरण)

भूमिका

जीवन के दुःखों का धीरज से सामना करने का बल एवं सर्वोच्च श्रेणी का स्थायी आनन्द केवल साधना द्वारा ही प्राप्त होता है । साधना अर्थात ईश्वरप्राप्ति हेतु आवश्यक प्रयत्न । गुरु की कृपा बिना साधना द्वारा ईश्वरप्राप्ति साध्य करना अत्यन्त कठिन है । गुरुकृपा द्वारा ईश्वरप्राप्ति की दिशा में बढना अर्थात 'गुरुकृपायोग' । गुरुप्राप्ति हेतु एवं गुरुकृपा का वर्षाव निरन्तर होने हेतु आवश्यक साधना है 'गुरुकृपायोगानुसार साधना' ।

गुरुकृपायोगानुसार साधना के दो अंग हैं – व्यष्टि साधना (व्यक्तिगत उन्नति हेतु प्रयत्न) एवं समष्टि साधना (समाज की उन्नति हेतु प्रयत्न) । इन दोनों अंगों के विविध पहलुओं को आचरण में लाने का मार्गदर्शन इस लघुग्रन्थ में किया है । गुरुचरणों में प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थ में दिए अनुसार साधना कर प्रत्येक व्यक्ति गुरुकृपा का पात्र बने ।

– संकलनकर्ता